



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

देहरादून जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

गिरीश चन्द्र तिवारी

असिस्टेन्ट प्रोफेसर (शिक्षा विभाग)

हे.न.ब.गढ़वाल (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय

डा0बी0जी0आर परिसर पौड़ी गढ़वाल

डा0कृपाल सिंह

असिस्टेन्ट प्रोफेसर (शिक्षा विभाग)

हे.न.ब.गढ़वाल(केन्द्रीय) विश्वविद्यालय

डा0बी0जी0आर परिसर पौड़ी गढ़वाल

सारांश –

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, इस प्रक्रिया के अन्तर्गत बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावशाली बनाना इसका प्रमुख लक्ष्य है। साधारणतः शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ ज्ञान प्राप्त करना एवं कौशल का विकास करना है। इसका आंकलन एक शैक्षिक वर्ष में परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर, शिक्षकों द्वारा करायी गयी शैक्षिक क्रियाओं के आधार पर या दोनों माध्यमों से किया जाता है। अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

शिक्षा के स्वरूप में शैक्षिक उपलब्धि का महत्वपूर्ण स्थान है। शैक्षिक उपलब्धि समस्त शिक्षा प्रणाली की रीढ़ की हड्डी के समान है। शिक्षा राष्ट्र के तकनीकी तथा सांस्कृतिक जीवन पर विशेष प्रभाव डालती है। यह शिक्षा उन नवयुवकों को शिक्षित करती है जो देश के सामाजिक निर्माण तथा आर्थिक विकास में प्रभावशाली हो सके। जिस देश में युवाओं की संख्या अधिक होती है वह देश युवा माना जाता है अर्थात् किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके युवाओं अर्थात् युवा पीढ़ी पर निर्भर करता है। यदि नौजवानों का समुचित उपयोग कर लिया जाय तो राष्ट्र का विकास अत्यंत तीव्रगति से होगा और यह विकास युवाओं के विकास पर निर्भर करेगा। अतः नवयुवकों के विकास पर उचित ध्यान देने की आवश्यकता है।

प्रस्तुत शोध पत्र देहरादून जिले के माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है।, जिसमें शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों के पिछले वर्ष के वार्षिक परीक्षा परिणामों का उपयोग किया गया है। शाधे में माध्यमिक स्तर के अन्तर्गत सरकारी विद्यालयों के 410 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया है।

मूल शब्द : देहरादून जिला, माध्यमिक विद्यालय, विद्यार्थी एवं शैक्षिक उपलब्धि ।

प्रस्तावना—

शिक्षा के विकास की पूर्णता की अभिव्यक्ति है। शिक्षा के द्वारा ही इच्छा शक्ति की धारा पर सार्थक नियंत्रण स्थापित कर सकता है। शिक्षा से ही व्यक्ति सही रूप में चिंतन करना सीखता है। शिक्षा व्यक्तियों का निर्माण तथा चरित्र को उत्कृष्ट बनाती है। शिक्षा एक साधन है, जो व्यक्ति के नैतिक, शारीरिक, संवेगात्मक बौद्धिक एवं आंतरिक ज्ञान को बाहर लाने में योग देने वाली एक क्रिया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि व्यक्ति के जीवन में शिक्षा ऐसा परिवर्तन लाती है। जिससे वह निरंतर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर हो सकता है। सामाजिक अन्तःक्रिया कई रूपों में होती है। प्रथमतः प्रतिद्वन्द्विता का रूप है जिसमें अविभाज्य लक्ष्य को दो या दो से अधिक व्यक्ति प्राप्त करना चाहते हैं और उसके लिए संघर्ष करते हैं। दूसरा रूप सहयोग का है। इसमें सामान्य लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सामूहिक प्रयत्न होता है। व्यक्तिगत उपलब्धियों के लिए प्रतिद्वन्द्विता एवं सामूहिक उपलब्धि के लिए सहयोग अत्यावश्यक सामाजिक अन्तःक्रिया है। सामाजिक अन्तःक्रिया का तीसरा रूप संघर्ष है। संघर्ष में पारस्परिक विरोध होता है। समंजन चौथा रूप है। समंजन में पारस्परिक अनुकूलन निहित है। सामाजिक अन्तःक्रिया का परिणाम हम दूसरों की रुचियों के साथ तादात्म्य के रूप में देखते हैं। संकेत एवं अनुकरण भी प्रभावशाली अन्तःक्रियाएँ हैं। इन अन्तःक्रियाओं से बालक का समाजीकरण होता है।

शिक्षा प्रणाली मानव की योग्यताओं के अधिकतम विकास की एक सर्वाधिक सरल, व्यवस्थित एवं प्रभावी प्रक्रिया है, जो उसके ज्ञान, बोध एवं कौशल में वृद्धि करती है। शिक्षा प्रणाली को और अधिक सशक्त बनाने में सूचना प्रौद्योगिकी की नवीनतम तकनीकियाँ, नवाचारों, उपकरणों तथा जनसंचार माध्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है तथा ज्ञान प्राप्ति एवं कौशल विकास के नये द्वार खोल दिये हैं। शैक्षिक उपलब्धि का महत्व प्रत्येक शिक्षण कार्य में अत्यन्त आवश्यक है इससे विद्यार्थी की बौद्धिक स्तर के उन्नयन का पता चलता है। आज के युग में तो शिक्षा के सभी स्तरों में इस प्रकार के परीक्षणों का प्रयोग हो रहा है। जैसे-जैसे शिक्षाशास्त्रियों ने यह अनुभव किया कि मौखिक परीक्षाओं का प्रचलन अब सम्भव नहीं है। वैसे-वैसे इस प्रकार के परीक्षणों का विकास एवं प्रयोग होना प्रारम्भ हुआ।

शैक्षिक उपलब्धि परीक्षणों से तात्पर्य उन परीक्षणों से है, जो छात्रों के ज्ञान, बोध, कौशल आदि का मापन करते हैं। विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषयों का अधिगम करने में छात्रों ने कहाँ तक सफलता प्राप्त की है? इसका मापन करने के लिए उपलब्धि परीक्षणों का ही प्रयोग किया जाता है। अतः कहा जा सकता है कि किसी निश्चित समयावधि में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के द्वारा किसी एक या अनेक विषयों में छात्र के ज्ञान व समझ में हुए परिवर्तन का मापन करने वाले उपकरणों को उपलब्धि परीक्षण कहते हैं। शैक्षिक उपलब्धि प्रायः शिक्षा के उद्देश्यों पर आधारित होते हैं तथा इनसे उद्देश्यों की प्राप्ति के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त होती है। शैक्षिक उपलब्धि में पूर्व में काफी शोधकार्य किये गये हैं। ओपीओमल्होत्रा (1990) ने "इम्पैक्ट ऑफ एजुकेशन ऑन द निकोबारीज़ ट्राइबल लाइफ एण्ड एडजस्टमेंट" नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया गया। इन्होंने अपने अध्ययन में निकोबारीज़ जनजातीय समूह के रहन-सहन व गृह वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया। एस0के0लखेड़ा (1986) ने "एजुकेशनल प्राबलम ऑफ द शिङ्गुल ट्राइबल प्यूपिल स्टूडिंग इन जूनियर एण्ड सैकण्डरी स्कूल्स ऑफ डिस्ट्रिक्ट चमोली" नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया। जिसमें इन्होंने इस तथ्य का पता लगाया कि चमोली जिले के जनजातीय लोगों में औपचारिक शिक्षा का प्रसार कितना है और जनजातीय बच्चों की शैक्षिक समस्याएँ क्या हैं? अरोरा (1990) ने विद्यार्थियों के गृह वातावरण एवं शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करने हेतु एक शोध कार्य किया। अध्ययन के निष्कर्षों से पाया गया कि विद्यार्थियों के गृह वातावरण तथा शैक्षिक निष्पत्ति के बीच उच्च स्तरीय सहसम्बन्ध गुणांक पाया गया। प्रस्तुत शोध समस्या देहरादून जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण –

- **देहरादून जनपद**— देहरादून जनपद उत्तराखण्ड राज्य का एक जिला है जो गढ़वाल मण्डल के तराई भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण नगर है। इसको दून घाटी के नाम से भी जाना जाता है देहरादून जनपद शिवालिक पर्वत श्रृंखला की घाटी में स्थित है तथा इसका कुछ भाग मैदानी है।
- **माध्यमिक स्तर**— माध्यमिक स्तर बालक के शैक्षिक स्तर का मध्यकाल होता है। कक्षा 9 से 10 तक को माध्यमिक स्तर कहा जाता है। प्रस्तावित शोध में देहरादून जनपद के बाहुल्य क्षेत्रों में माध्यमिक शिक्षा के कक्षा 9 एवं 10 के स्तर को शामिल किया जायेगा ।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व –

आज के छात्र एवं छात्रायें ही देश के भावी कर्णधार हैं और इसके निर्माण में शिक्षा की भूमिका अत्याधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षा के बिना कोई भी छात्र व छात्रा समाज में अपना स्थान नहीं बना सकती है। कहा भी जाता है कि बालक समाज के दर्पण के रूप में प्रतिबिम्बित होते हैं, जो अपनी कार्यकुशलता व व्यक्तित्व से समाज को प्रतिबिम्बित करते हैं।

सामान्यतः देखा जाय तो जिन बालकों की बुद्धि-लब्धि उच्च होती है, उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च होती है। देखना यह है, कि क्या शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों की बुद्धि में कोई अंतर पाया जाता है? यदि है, तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि क्यों और कैसे प्रभावित होती है। अतः वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है, कि बालकों की बुद्धि-लब्धि का पता लगाया जाय व देखा जाय कि कहाँ तक बुद्धि-लब्धि से शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित हो रही हैं? जिससे इस दिशा में ठोस प्रयास किया जा सकें, ताकि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकें। प्रस्तुत शोधकार्य द्वारा शोधार्थी यह पता लगाना चाहता है, कि बुद्धि द्वारा शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है।

शोध उद्देश्य –

कोई ज्ञान या कोई अन्वेषण उद्देश्य विहीन नहीं होता है। अतः इस शोध के भी कतिपय उद्देश्य हैं।

1. देहरादून जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पना के रूप में निम्नवत् है:—

1. देहरादून जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता के द्वारा यादृच्छिकरण न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श में कुल 410 विद्यार्थियों का चयन किया गया है, जिसमें 193 बालक एवं 217 बालिकाओं को प्रस्तुत शोध हेतु चयनित किया गया है। शोध हेतु वर्णनात्मक (सर्वेक्षण) शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन का परिसीमांकन

1. यह शोध अध्ययन उत्तराखण्ड राज्य के जिला देहरादून के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों तक ही सीमित किया गया है।
2. न्यादर्श का चुनाव माध्यमिक स्तर के कक्षा 09 तथा 10 के छात्र एवं छात्राओं को ही चयनित किया गया है।
3. न्यादर्श में कुल 410 विद्यार्थियों का चयन किया गया है, जिसमें 193 बालक एवं 217 बालिकाओं को लिया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने निम्न उपकरणों का प्रयोग किया है—

1. शैक्षिक उपलब्धि हेतु वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांक

सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या— प्रदत्तों के विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा टी-टेस्ट का प्रयोग किया गया है।

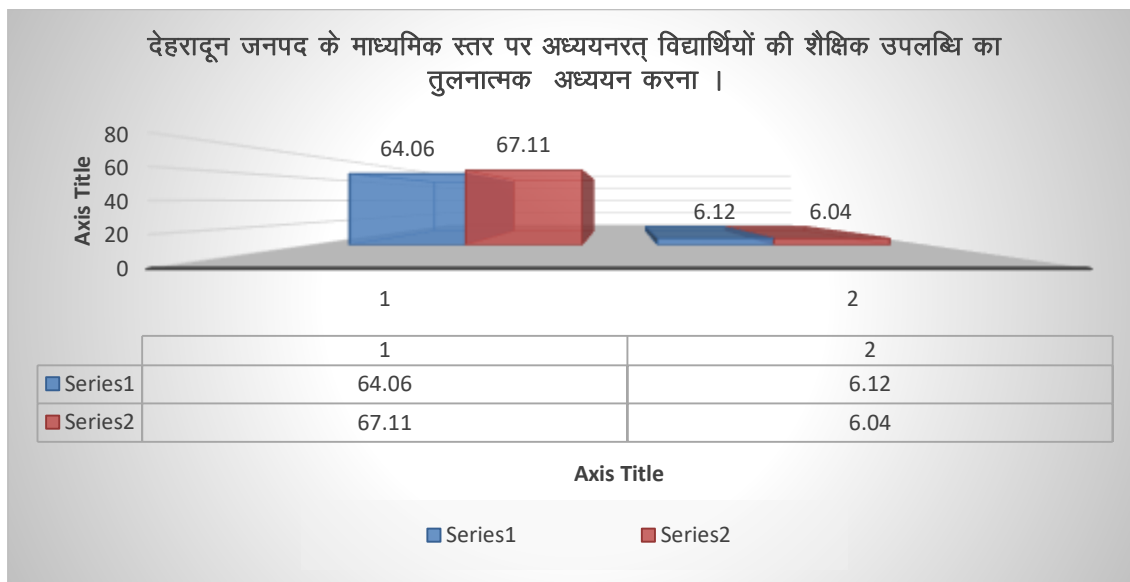
परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या— शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारी को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया गया, जो निम्नानुसार है—

सारणी क्रमांक 1:

देहरादून जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

क्र0स	न्यादर्श में चयनित	N	M	मानक विचलन	t मान	सार्थकता
1	छात्र	193	64.06	6.12	5.06	001
2	छात्राएं	217	67.11	6.04		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि देहरादून जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के छात्रों का औसत उपलब्धि 64.06 तथा मानक विचलन 6.12 है तथा छात्राओं का औसत उपलब्धि 67.11 तथा मानक विचलन 5.06 है।



दोनों समूहों की औसत उपलब्धियों में अंतर की गणना 't' परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त 't' का मान 5.06 है। इस प्रकार छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अधिक है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल अर्चना, 1992, "ए सोशल, साइक्लोजिकल एण्ड एजुकेशनल स्टडी ऑफ शैड्यूल कॉस्टस स्टूडेंट्स इन हाई स्कूल ऑफ लखनऊ सिटी" पी-एचडी शिक्षाशास्त्र लखनऊ विश्वविद्यालय
- बेन्जामिन, जोसेफ, 1989, "शिडयुल्ड कास्ट इन इंडियन पॉलिटिक्स एण्ड सोसाइटी", नई दिल्ली: ईएसएसएस पब्लिकेशन ।
- चौरसिया, बीपी, 1999, "शिडयुल्ड कास्ट्स एण्ड शिडयुल्ड ट्राइब्स इन इंडिया", इलाहाबाद, यूपी: चुग पब्लिकेशन,
- माइनरिटीज, शिडयुल्ड कास्ट एण्ड शिडयुल्ड ट्राइब्स इन कन्टेम्परेरी इंडिया" हायर एजुकेशन, वोल्यूम 26 नं० 1, पृष्ठ 69-92
- गुप्ता बीएस, 1988, "कम्पैरिटिव स्टडी ऑफ एजुकेशनल अचीवमेंट ऑफ शिडयुल्ड कास्ट्स एण्ड शिडयुल्ड ट्राइब्स स्टूडेंट्स ऑफ क्लास 10 ऑफ यूपी
- काबरा, ललिता, 2000, "शिडयुल्ड कास्ट गर्ल्स", नई दिल्ली: मित्तल पब्लिकेशन ।
- लखेड़ा, एसके, 1986, "एजुकेशनल प्रोब्लम ऑफ द शिडयुल्ड ट्राइब प्यूपिल स्टडिंग इन जूनियर एण्ड सैकण्डरी स्कूल्स ऑफ डिस्ट्रिक्ट चमोली", पी-एचडी, शिक्षाशास्त्र, हेनब गढ़वाल विश्वविद्यालय
- सुजाथा के 1999, "एजुकेशन ऑफ इंडियन शैड्यूल ट्राइब्स" इन्टरनेशनल इन्सटीट्यूट फोर एजुकेशनल प्लानिंग, / यूनेस्को, 7-9 रेयू यूजैन, डेलाकोएक्स, 75116 पेरिस
- अरुण कुमार सिंह: शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन पब्लिशर्स, पटना, 2006; 436 ।
- राय पारसनाथ, अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, संकरण-2004, 65 ।
- मंगल, एस.के. एवं मंगल श्रीमती शुभ्रा : विद्यार्थी विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, लायल बुक डिपो, 2005 ।

- पाठक, पी.डी. एवं मंगल, एस.के. : अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, 2013।
- गुप्ता, एस.पी. : सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1997।
- सिंह अरुण कुमार : “मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ” चतुर्थ संस्करण, मोतीलाल नगर बनारसीदास दिल्ली, 2001।
- त्रिपाठी, प्रो. मधुसूदन : शिक्षा दर्शन और मनोविज्ञान का शब्दकोश, खण्ड-5 बाल विकास, ओमेगा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2007।

